आचार्यश्री वसुनंदीजी महाराज द्वारा विरचित आदर्श शिक्षाविधि

– डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ सागर

(राष्ट्रपति सम्मानित)

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ जीवानोत्थान और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा वही है जो कल्याण का मार्ग बनाए। आचार्यश्री वसुनंदीजी महाराज ने आयंस सिक्खाविही (आदर्श शिक्षाविधि) ग्रन्थ का प्रणयन किया। यह ग्रन्थ शिक्षा के आयामों को समझने के महत्वपूर्ण पायदान है।

शिक्षा का लक्षण – आचार्यश्री ने प्रथम दो गाथाओं में मंगलाचरण किया है। तत्पश्चात् गाथा क्रमांक 3 से 10 तक में शिक्षा के लक्षण को कहा है।

कारणं सिट्ठदाए, संतिकारगा पसत्था लोयम्मि।

हिदकारगा अहिद-हारगा मुत्तिदायगा सिक्खा।।

जो लोक में शिष्टता का कारण है, प्रशस्त व शांतिदायक है, हितकारक है, अहितहारक है और मुक्ति प्रदान करने वाली है वही शिक्षा है। यहाँ पर आचार्य श्री शिक्षा के पाँच लक्षण कहे हैं। ये पाँच लक्षण सम्पूर्ण शिक्षा के महत्वपूर्ण आयाम है।

प्रचलित शिक्षा के अर्थ और लक्षणों को देखते हैं तो पाते हैं कि शिक्षा, एक व्यापक और बहुआयामी अवधारणा है, जिसे सीखने और सिखाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों में वृद्धि करना है, ताकि वह अपने जीवन और समाज में बेहतर ढंग से योगदान कर सके। शिक्षा औपचारिक, अनौपचारिक और गैर-औपचारिक रूप से प्राप्त की जा सकती है।

उपरोक्त यह लक्षण, है तो अच्छा। लेकिन आचार्यश्री वसुनंदी जी ने महाराज के शिक्षा के सार्वभौमिक लक्षण को लिखा है, जो व्यक्ति के मानसिक-शारीरिक-वाचनिक-आध्यात्मिक उन्नति को कराने वाला है।

आठ गाथाओं में आचार्यश्री ने शिक्षा के लक्षण को प्रतिभाषित किया है। निश्चित ही शिक्षा को सार्वभौमिक स्वरूप देने के लिए उनकी परिभाषाएँ अत्यंत सार्थक हैं।

शिक्षा की आवश्यकता - आचार्यश्री गाथा क्रमांक 11-20 में शिक्षा की आवश्यकता पर चर्चा की है। उन्होंने कहा है - शिक्षा संस्कार सहित होना चाहिए। अच्छी शिक्षा से दुर्विचार, दुर्चिंतन, दुर्भाव आदि दूर होते हैं, सम्यक् भावों का प्रणयन होता है। वे कहते हैं -

तरु-संवड्ढण-हेदू, सलिल-उव्वरग-अक्कपयासादी।

सुसिक्खा एगमेत्तं, उवायो जीवण-वड्ढणस्स।।9।।

जिस प्रकार जल, खाद, सूर्य प्रकाशादि वृक्ष सवंर्धन का हेतु है उसी प्रकार से एकमात्र सम्यक् शिक्षा ही जीवन के सवंर्धन का उपाय है। शिक्षा के बिना विनय, कर्तव्य पालन, सदाचार, तप और संयम से जैसे उपक्रम अत्यंत कठिन हैं।

स्त्री शिक्षा - आचार्यश्री ने गाथा क्रमांक 21-26 तक स्त्री शिक्षा पर जोर दिया है। वे कहते हैं -

जस्सिं कुले सिक्खदा, णारी सक्कार-जुदा तो णिच्चं।

कुलो णंददि सग्गोव्व, सुह-संती पडिक्खणे तत्थ।।22।।

जिस कुल में नारी सुशिक्षित व संस्कारयुक्त होती है तो वह कुल आनंदित होता है, वहाँ प्रतिक्षण स्वर्ग के समान सुख-शांति होती है।

जैसे लोक में तेल व बाती के बिना दीप-प्रज्जवलन असंभव है उसी प्रकार से स्त्री शिक्षा के बिना संस्कार, शांति और मर्यादा संभव नहीं है।

शिक्षा के भेद - आचार्यश्री ने शिक्षा के भेदों का वर्णन गाथा क्रमांक 27 में किया है -

चदुहा सिक्खा देहिग-ववहार-माणसज्झप्प-भेयादु।

ताहि विणा णो सफलीभूदा मासविहीणतुसोव्व।।27।।

अर्थात् दैहिक, व्यवहार, मानसिक और अध्यात्म शिक्षा के भेद से शिक्षा के चार प्रकार कहे गए हैं। उनके बिना शिक्षा वैसे ही सफलीभूत नहीं होती जैसे दाल से विहीन छिलका।

शारीरिक शिक्षा - इसमें गाथा क्रमांक 28-32 तक शारीरिक शिक्षा का वर्णन किया है। आचार्यश्री लिखते हैं देह को सुदृढ बनाए रखने के लिए योग-व्यायाम और संयमित जीवन होना आवश्यक है। देश की रक्षार्थ अस्त्र-शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण, कृषि, श्रम, पशुपालन आदि कार्यों में भी प्रवृत्ति करना चाहिए।

व्यवहारिक शिक्षा - इसमें गाथा क्रमांक 33-39 तक व्यवहारिक शिक्षा का वर्णन है। यह शिक्षा मानव जीवन के चरित्र को उज्जवल बनाने के लिए परम आवश्यक है। सत्संगति, पठन-पाठन, प्रेम, वात्सल्य, मैत्री आदि गुणों का समावेश होना ही व्यवहारिक शिक्षा है।

मानसिक शिक्षा - इसमें गाथा क्रमांक 40-66 तक मानसिक शिक्षा का वर्णन किया गया है। यह अत्यंत आवश्यक शिक्षा है क्योंकि इसी शिक्षा के बल पर व्यक्ति अपने जीवन को श्रेष्ठ दिशा दे सकता है। जिसमें ईर्ष्या, द्वेष आदि की दुर्भावना को हटाकर शिक्षा प्राप्त करने पर जोर दिया है। आचार्यश्री लिखते हैं -

जैसे पुष्पों की सुगंधि से उनके निकट भौंरे आते हैं उसी प्रकार से आचरण, संयम और तप के बल से मनुष्यों में ज्ञान उत्पन्न होता है। आगे कहते हैं - संघर्ष के समय धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। अपनी शक्ति कभी नहीं छिपानी चाहिए। मानसिक शक्ति की वृद्धि के लिए सम्यक् श्रम करना चाहिए।

आध्यात्मिक शिक्षा - इसमें गाथा क्रमांक 67-75 तक आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर दिया गया है। भारत देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी आध्यात्मिक शिक्षा पर बहुत जोर दे रहे हैं और वे अपनी सफलता और स्वास्थ्य का राज आध्यात्मिक शिक्षा को ही मानते हैं। आचार्यश्री कहते हैं - अध्यात्मज्ञान से प्राप्त परम शक्ति से जीवन जीवन में आने वाली प्रतिकूलताओं व विषम परि िस्थतियों में भी विजय प्राप्त करता है।

शिक्षा कैसी हो - इसमें गाथा क्रमांक 76-77 शिक्षा के स्वरूप की चर्चा की। शिक्षा कैसी हो ? इसके संबंध में आचार्यश्री कहते हैं - सुशिक्षा कदापि संक्लेशकारक व भारभूत नहीं होना चाहिए। वह जीवन के लिए आधारभूत, सारभूत एवं सबसे अधिक प्रिय होना चाहिए।

शिक्षा विधि - इसमें गाथा क्रमांक 78-79 में शिक्षा विधि की चर्चा की गई है। आचार्यश्री शिक्षाविधि के संबंध में कहते हैं - जिस विधि से चिंता, विषाद, कषायों का उद्वेग, भोगों की अभिलाषा व चित्त में क्षोभ न हो, ऐसी उत्कृष्ट शिक्षा विधि होना चाहिए।

शिक्षा केन्द्र - इसमें गाथा क्रमांक 80-81 में शिक्षा केन्द्र की चर्चा की गई है। शिक्षा का केन्द्र शुद्ध पवन से युक्त हो, अति गर्मी, अति शीत और अति वर्षा वाला न हो, वास्तविकता आज विद्यालयों को आवश्यकता है ऐसे ही शिक्षाकेन्द्रों की। आचार्यश्री के ये उत्कृष्ट विचार शिक्षा केन्द्रों को श्रेष्ठ बनाने के अत्यंत उपादेय हैं।

शिक्षक- इसमें गाथा क्रमांक 82-86 में शिक्षक की चर्चा की गई है। शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक बिना विद्यालय की परिकल्पना शून्य है। आचार्य श्री कहते हैं - शिक्षक शिष्यों के पिता के समान होता है वह सहनशील, धीर, वीर, गंभीर, सरल, सहज, स्नेही और संस्कृति

व सभ्यता का संरक्षक होता है। शिक्षक आत्मानुशासक, सदाचारी, त्रियोग संयमी, दयालु, बहुत प्रतिभा युक्त, विज्ञानी और व्यवहारकुशल होता है।

आदर्श शिष्य - इसमें गाथा क्रमांक 88-89 में आदर्श शिष्य की चर्चा की गई है। शिष्य के संबंध में आचार्यश्री कहते हैं - जो शिष्ट, इंदियों का दमन करने वाला, शांत, मंदकषाय, सेवाभावी, उद्यमी, विनयशील, सदाचार, गुरु सेवक, ज्ञानपिपासु, एकाग्र मन वाला और व्यवहारनिपुण होता है वह आदर्श शिष्य है।

शिष्य गुरु संबंध - इसमें गाथा क्रमांक 90-94 में शिष्य गुरु संबंध की चर्चा की गई है। वर्तमान के परिदृश्य में गुरु शिष्य संबंधों में अनेक विसंगतियाँ आ गई है। ऐसे में आचार्यश्री लिखते हैं - गुरु शिष्य का संबंध नित्य निःस्वार्थ, स्व पर हितकारी एवं पिता-पुत्र के संबंध के समान होना चाहिए।

शिक्षा कैसे दें? - इसमें गाथा क्रमांक 95-105 में शिक्षा कैसे दें? की चर्चा की गई है। आचार्यश्री लिखते हैं कि आज की पीढ़ी पुस्तकी ज्ञान में ही न सिमटें। उन्हें व्यवहारिक और प्रायोगिक शिक्षा भी बराबरी से मिलती रहे, जिससे उनका जीवन श्रेष्ठ बने। विवेकपूर्ण ढंग से एवं योग्यतानुसार नारियों को 64 एवं पुरुषों को 72 कलाएं सिखाना चाहिए।

योग्यजनों की ही पदनियुक्ति - इसमें गाथा क्रमांक 106-110 में योग्यजनों की ही पदनियुक्ति की चर्चा की गई है। यह एक महत्वपूर्ण प्रसंग है। इस संबंध में प्रायःकर कोई बोलने को तैयार नहीं है। आचार्यश्री का यह मार्गदर्शन अत्यंत उपादेय है। वे लिखते हैं - शासन को चाहिए कि वे योग्यतानुसार ही पदों पर नियुक्तियाँ करें, क्योंकि अयोग्य व्यक्ति के आने से सम्पूर्ण व्यवस्था नष्ट हो जाती है।

अन्तिम मंगलाचरण एवं प्रशस्ति - इसमें गाथा क्रमांक 111-113 तक में अन्तिम मंगलाचरण और प्रशस्ति का लेखन है।

निश्चित ही आचार्यश्री द्वारा विरचित आदर्श शिक्षाविधि आज की पीढ़ी और शिक्षाविदों के लिए मील का पत्थर साबित होगी। यह एक ऐसी कृति है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में नवीनता आयेगी और छात्र राष्ट्र निर्माण अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभायेंगे।